साइकिल का सपना

मैं बड़ी होकर मोटर साइकिल बनूँगी

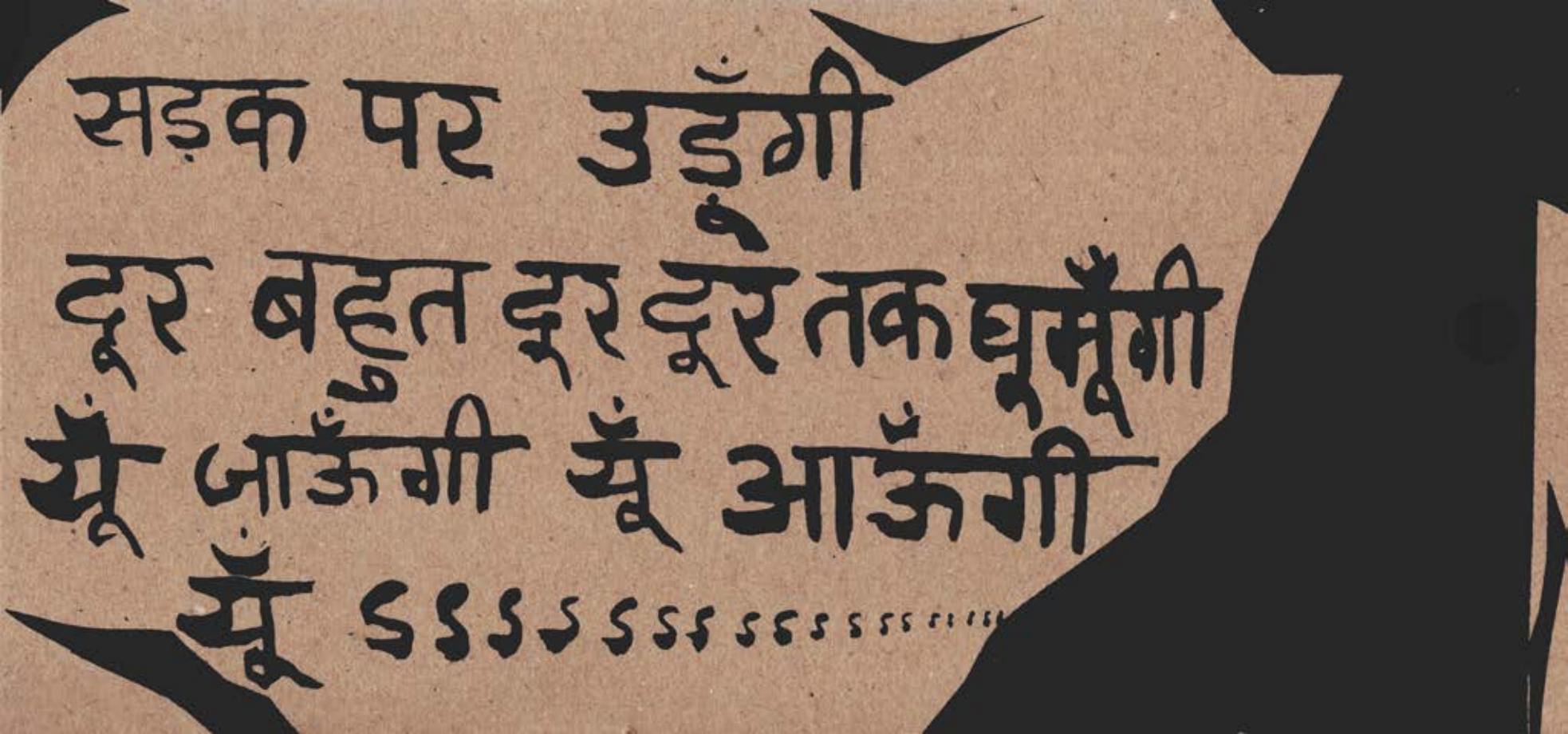

सड़क पर उड़ूँगी

दूर बहुत दूर दूर तक घूमूँगी

यूँ जाऊँगी यूँ आऊँगी

यूँ ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

अरे रे रे रे ऽऽऽऽऽ रेम्!

मैं मैं मैं मोटर साइकिल बन रही हूँ।

मैं मोटर साइकिल
बन गई हूँ।

मैं सड़क पर उड़ रही हूँ
गाँव शहर देश विदेश
दूर बहुत दूर-दूर तक
जा रही हूँ आ रही हूँ
आ रही हूँ जा रही हूँ।

कृपया यहाँ वाहन
ना लाएँ
दुनिया में
तैल खत्म
हो गया है

पैट्रोल पम्प

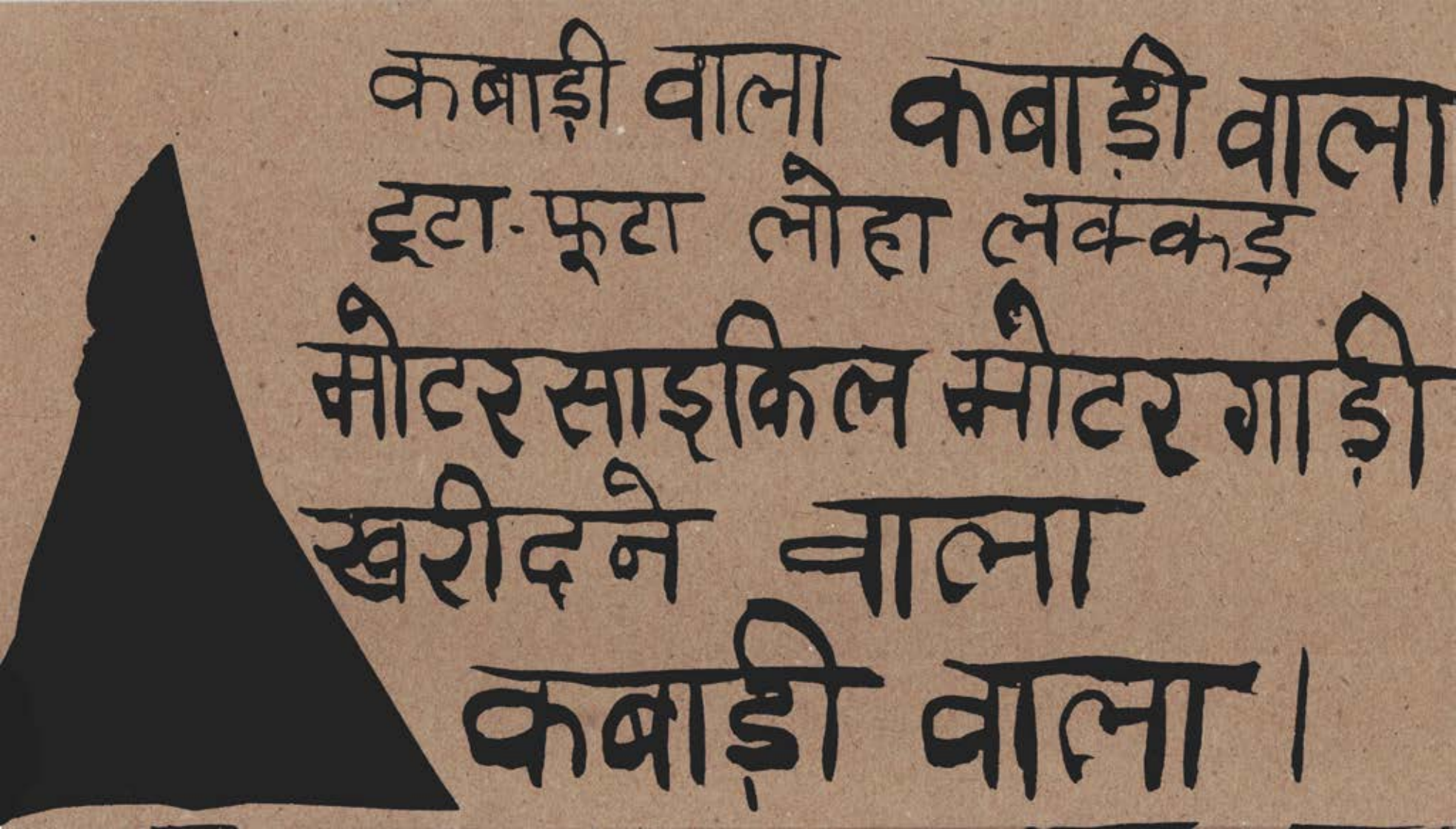
कबाड़ी वाला कबाड़ी वाला
टूटा-फूटा लोहा लक्कड़
मोटर साइकिल मोटर गाड़ी
खरीदने वाला
कबाड़ी वाला।

नहीं!
मैं मोटर साइकिल
की मौत
नहीं मरूँगी।
फिर से
साइकिल
बनूँगी।
ट्रिन-ट्रिन।

खेतों-बंगलों में घूमूँगी
चिड़ियों-तितलियों से बातें करूँगी
मछलियों-मकड़ियों से बातें करूँगी
धरती के आँगन में खेलूँगी
आसमान ओढ़कर
सो जाऊँगी।

बच्चों के लिए कार्यशाला के दौरान रची गई किताब।
नवाज बाई रतन टाटा ट्रस्ट, डमरू, आइ डी सी, आइ आइ टी बाम्बे के सहयोग से विकसित।

संस्करण: नवम्बर 2011 / 1000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: मई 2013 / 1000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2015 / 1000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: जुलाई 2016 / 1000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: मई 2017 / 1000 प्रतियाँ

मूल्य ₹ 65.00

डमरू
IDC, IIT BOMBAY

parag SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित

कहानी - प्रभात

कला - विद्युत राय